International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

# पारम्परिक लोक संचार के माध्यम एवं उनकी विशेषताएं

**डॉ0 अन्जू पाण्डेय**

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग,

के0डी0एस0महाविद्यालय पाली, सुबासपुर, जौनपुर

(वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर)

भारतीय संस्कृति अपने उद्भव काल से ही ग्राम्य रही है। यहाँ की ग्राम्य जनता के बीच जिन अनगढ़ लोककलाओं का विकास हुआ, वे हमारी अद्भुत सांस्कृतिक धरोहर हैं। ग्रामीण परिवेश के जनसंचार माध्यम श्रोताओं, दर्शकों तथा क्रियात्मक सहयोगियों के बीच अद्भुत सामंजस्य पर आधारित होते हैं। भारतीय लोक संचार माध्यमों में अधोलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं– 1. कठपुतली, 2. लोकगीत, 3. लोकगाथा,

4. लोककथा, 5. लोकनाट्य, 6. स्वांग, 7. रासलीला, 8. लोककला।

## 1. कठपुतलीः–

कठपुतली नृत्य का चलन बच्चों के गुड्डे–गुड़िया के खेल से शुरू हुआ होगा। गांव का यह सबसे सशक्त संचार माध्यम है। अमीर–गरीब, गाँव तथा नगर, शिक्षित और अशिक्षित सभी का एक सा मनोरंजन करने के साथ ही कठपुतली नृत्य द्वारा महत्वपूर्ण सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदेशों का संचार भी बहुत सरलतापूर्वक हो जाता है। कठपुतली नृत्य द्वारा मनोरंजन, शिक्षा, सामाजिक संदेश तथा राजनैतिक संदेश स्वतः प्रसारित किये जाते हैं। राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द, स्वास्थ्य, कृषि, साक्षरता, उद्योग तथा राजनीति संबंधी विषयों को कठपुतली नृत्य द्वारा बहुत आसानी से प्रसारित किया जा सकता है। कठपुतली का खेल बहुत प्राचीन कला है। कुछ विद्वान तो भारतीय नाटकों की उत्पत्ति कठपुतली नृत्य से ही मानते हैं। परदे के पीछे बैठे सूत्रधार की अँगुलियों में कठपुतलियों को बड़े मनोहारी ढंग से संदेश प्रसार का कार्य करती हैं। कठपुतली नृत्य भारत से ही विदेशों में गया है। 1206 ई0 के आस पास

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

कुतुबुद्दीन ऐबक के शासनकाल में कठपुतली कला का चलन था। अकबर के भी शासन काल में कठपुतली कला का पर्याप्त सम्मान था।

आज भी भारतीय कठपुतलियों की वेशभूषा मुगलकालीन ही होती है। यह भी कहा जाता है कि कलात्मक कठपुतलियों के निर्माता गरासिया और बंजारा जाति के लोग हैं। पर्दों के समक्ष गाजे–बाजे के साथ कठपुतलियों का नाच दिखाना इनका पेशा था। उदयपुर की बनी कठपुतलियाँ विश्व प्रसिद्ध मानी गयी हैं। कठपुतलियाँ चार प्रकार की होती हैंः–

1. **धाँगे वाली कठपुतलीः–**

   ये कठपुतलियां लचकदार होती हैं। इनकी भुजाओं, पैरों और घुटनों में जोड़ होते हैं। ये कागज, कपड़ा, लकड़ी, चीथड़ों तथा बुरादे से बनायी जाती हैं। कठपुतली के विभिन्न अंगों से धागे जुड़े रहते हैं। इन धागों का नियंत्रण पर्दे के पीछे बैठा कलाकार करता है, जो अपने हस्तकौशल से कठपुतली को नचाता है।

2. **दस्ताने वाली कठपुतलीः–**

   कठपुतली कलाकार दस्ताने की तरह कठपुतली को अपने हाथ में पहनता है। कठपुतली के सिर तथा दोनों हाथ कलाकार के हाथों द्वारा संचालित होते हैं। कलाकार के हाथ तरह–तरह के रंगीन वस्त्रों से सजे रहते हैं, जो कठपुतली के वस्त्रों का आभास कराते हैं। एक ही व्यक्ति दायें एवं बायें हाथो में दो कठपुतलियों को एक साथ नचा सकता है। कठपुतली चालक स्वयं आवाज बदल–बदल कर दोनों कठपुतलियों से संवाद भी करता है।

3. **छड़ी से बनी कठपुतलीः–**

   ये कठपुतलियाँ छड़ी एवं कागजों से निर्मित होती हैं। कठपुतलियाँ आकार में बड़ी और लोहे की छड़ी के सहारे संचालित होती हैं। भारत में पश्चिम बंगाल में इन कठपुतलियों का प्रचलन है। जापान और यूरोपीय देशों में भी इनका प्रचलन है। इसको बनाना और चलाना बहुत सरल होता है।

4. **छाया कठपुतलीः–**

चमड़े, प्लास्टिक या टीन से निर्मित इन कठपुतलियों की छाया एक परदे पर डाली जाती है। यह कठपुतली भी छड़ द्वारा नियंत्रित होती हैं। आन्ध्र, कर्नाटक और उड़ीसा में यह कठपुतली अधिक लोकप्रिय है।

हास्य, संगीत, गीत, नृत्य के साथ–साथ कठपुतली के कलाकारों का कौशल भी इसे कलात्मक एवं अद्भुत मनोरंजनकारी बनाते हैं। आजकल परिवार नियोजन, मद्य निषेध, दहेज प्रथा निषेध एवं जल संरक्षण जैसे जन उपयोग के कार्यक्रम कठपुतलियों के माध्यम से प्रदर्शित किये जाते हैं। भारत सरकार संचार के इस सशक्त माध्यम पर कोई विशेष ध्यान नहीं दे रही हैं। विदेशों में कठपुतली प्रदर्शन केन्द्र स्थापित किये गये हैं। भारत का सांस्कृतिक विभाग रूपांकन योजनान्तर्गत यदा–कदा कठपुतली नृत्य पर ध्यान देता है। उत्तर प्रदेश के साक्षरता निकेतन द्वारा भी इस कला के विकास का थोड़ा प्रयास किया गया है। गुजरात सरकार ने कक्षा–8 तक की शिक्षा में कठपुतली निर्माण कला का प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया है।

**2. लोकगीत अथवा लोक साहित्यः–**

लोकगीत निश्चल लोकमन के बिम्ब होते हैं, जिसमें बनावटीपन नहीं होता है। यह लोकगीत अकृत्रिम या सजीव होते हैं। लोकगीत अथवा लोक साहित्य की विषय सीमा अति विस्तृत है। इसके अन्तर्गत अधोलिखित विषय आते हैंः–

1. लोक जीवन के रीति–रिवाज, व्रत–त्योहार, पूजा–अनुष्ठान, उत्सव, शादी–विवाद आदि।
2. लोक प्रचलित कथाएं, गाथाएं, गीत, पहेलियां, कहावतें आदि।
3. जादू–टोना, भूत–प्रेत, मारण–मोहन आदि से सम्बन्धित टोटके तथा विभिन्न अंध विश्वास।
4. लोक नाटक, लोक नृत्य तथा व्यक्ति के विविध आंगिक क्रिया–कलाप।
5. ग्रामीण जीवन के खेल–कूद, बाल जीवन से सम्बन्धित खेल आदि।

लोक साहित्य की दृष्टि से भारत अत्यन्त धनी है। चूँकि यह विविधतापूर्ण देश है। प्रत्येक प्रदेश की भाषा और संस्कृति में विभिन्नता है। सरकार के विविध योजनाओं के प्रचार–प्रसार के सशक्त माध्यम हेतु लोकगीत की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन गीतों के माध्यम

से पहुँचाया गया संदेश लोकमन को प्रभावित करता है। रेडियो, टेलीविजन आदि द्वारा सामान्य जनमानस तक किसी संदेश को पहुँचाये जाने में लोकगीत सशक्त माध्यम के रूप में सामने आ रहे हैं। इनके द्वारा प्रेषित संदेश जनमानस में गहराई से उतरता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बीच जन–जन तक देशभक्ति का संचार करने में लोकगीतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

कुछ प्रसिद्ध लोक–गीतों के नाम इस प्रकार हैं:–

सोहर, व्याह गीत, झूमर, चौटा, होली, बारहमासा, वँवारा, कजरी, गारी, बिरहा, कीर्तन, निर्गुन, राधेश्यामी, पूर्वी, आल्हा, लोरिकायन, भरथरी, छठगीत, जट्ट–जट्टिन गीत आदि। ये लोकगीत ढोलक, तबला, मजीरा, सरंगी, खंजड़ी, डमरू, झाझ, डफली, इकतारा, बीन, तूम्बी, करताल, हारमोनियम आदि वाद्ययंत्रों की सहायता से अत्यन्त ही रोमांचक एवं मोहक हो उठते हैं। लोकगीत अथवा लोक साहित्य का कोई रचनाकार नहीं होता। ये मौखिक परम्परा में विकसित होते रहते हैं। अब इनका संकलन किया जाने लगा है।

3. **लोकगाथाएँ**:– लोकानुभूति और गेयता एवं कथातत्व के योग से लोकगाथा बनती है। लोकगाथाओं के तीन प्रकार हैं:–

(1) **प्रेम प्रधान लोक गाथाएं**:– हीर–राँझा, ढोला–मारू–रा–दूला भरथरि चरित्र।

(2) **वीरता प्रधान लोकगाथाएं**:– आल्हा, लोरिकायन

(3) **रोमांचक लोकगाथाएं**:– सोरठी

लोकगाथाएँ लम्बी होती हैं। इनमें विविध घटनाओं और अनुभूतियों का अंकन होता है। इनमें निहित कथाएँ, अनेक रसों से सम्बद्ध होती है। इनमें विषय की प्रधानता होती है। प्राचीन परम्पराओं को समेटकर चलने वाली ये कथाएं वैयक्तिकता से कोसों दूर, सामूहिकता पर बल देती हैं। गेयता इनका सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। इनकी कुछ विशेषताएं इस प्रकार हैं:–

1. लोकगाथाएं लोककंठ द्वारा प्रसारित होती हैं। इनका कोई रचयिता नहीं होता है।
2. इनमें लोक भाषा तथा लोक–कहावतों एवं मुहावरों का प्रयोग होता है।
3. यह बिल्कुल अनगढ़ लोक छन्दों में रचित होती हैं, जिनमें तुकबन्दी का सर्वथा अभाव

रहता है।

4. भाव प्रवणता और कल्पना लोकगाथाओं का प्राण होता है।

5. लोकगाथाओं में निर्मल लोक मन झाँकता है। यहाँ ऐतिहासिक एवं सामाजिक तथ्य भी गायक की कल्पनाओं में लिपटकर प्रस्तुत होते हैं।

**4. लोककथाएँः–**

मौखिक या लिखित परम्परा में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होने वाली कथाएँ इस वर्ग में आती हैं। इनके छह प्रमुख भेद किये गये हैंः– 1. उपदेश कथाएँ 2. व्रत कथाएँ, 3. प्रेम कथाएँ,

4. मनोरंजक कथाएँ, 5. सामाजिक कथाएँ।

इन कथाओं में सर्वत्र रहस्य, रोमांच और अलौकिकता का पुट रहता है। इनके वर्णन अत्यन्त सहज एवं सरल भाषा में होते हैं। समाज की मंगल कामना के साथ ही इन कथाओं में प्रेम का पुट भी रहता है। पालि की जातक कथाएँ, संस्कृत के हितोपदेश पंचतंत्र, कथासरित्सागर आदि भी लोककथाएँ हैं। विविध परिकथाएँ, साधुओं, संतों तथा राजाओं की अलौकिक कथाएँ भी लोककथाएँ हैं।

**5. लोकनाट्यः–**

नृत्य, संगीत एवं स्वांग प्रधान तथा आडम्बरहीन लोकनाट्य जन–जन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। विदेसिया कीर्तनिया (नृत्य प्रधान), तमाशा, शेखावटी (संगीत प्रधान) बहुरूपिया, नकल (स्वांग प्रधान), लोक नाट्य हैं। लोक नाट्यों में लोकरंजन की अद्‌भुत शक्ति होती है। इनके माध्यम से शिक्षित, अशिक्षित, स्त्री, बालक, वृद्ध सभी का मनोरंजन सहज रीति से संभव है। यही कारण है कि साहित्य रचनाओं में नाटक को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। श्रम से थके, दुःखी, शोकाकुल तथा तपस्यारत सभी के लिए नाटक मनोरंजनकारी, लोक संगीत को उच्चावच ताने अद्‌भुत मनमोहक होती हैं। ऐतिहासिक, धार्मिक, सामाजिक तथा हास्य व्यंग प्रधान विषयों को माध्यम बनाकर प्रदर्शित किये जाने वाले लोकनाट्य, दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ ही उनमें

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

अद्भुत जीवन शक्ति का भी संचार करते हैं। लोकनाट्य द्वारा प्रसारित संदेश तो दर्शकों के मन पर अमिट छाप छोड़ते हैं।

6. **स्वांगः**— स्वांग एक प्रकार के लोकनाट्य ही हैं। इनमें विशेष रंग मंच की व्यवस्था नहीं करनी पड़ती। खुले आसमान के नीचे कहीं भी इनका प्रदर्शन संभव है। दर्शक जमीन, चबूतरे या छत पर बैठकर स्वांग के अभिनय का आनन्द लेते हैं। इनकी शैली नौटंकी, तमाशा, भड़ैंती, विदेसिया, भांड़ आदि कोई भी हो सकती है। अपने तीखे हास्य ब्यंग के कारण ये अधिक लोकप्रिय संचार माध्यम है।

7. **रासलीलाः**— रासलीला का सम्बन्ध कृष्ण चरित्र से है। इसमें संगीत, नृत्य और संवाद तथा अभिनय चार तत्वों का योग रहता है। नृत्य इसका प्रमुख अंग है। ग्रामीण जीवन में रासलीला का महत्व श्रद्धा और भक्ति पर आधारित रासलीला की गणना भी लोकनाट्य के अन्तर्गत की जा सकती है।

8. **लोककलाः**— भारत में विविध त्योहारों, पर्वों और उत्सवों पर लोककलाओं का प्रयोग होता है। इन अवसरों पर गेरू, खड़िया तथा तरह—तरह के रंगों से चित्र बनाये जाते हैं। चौक पूरना, वेदी बनाना, दीवारों पर चित्रकारी करना, लोककला के अंगभूत हैं। अल्पना भी इसी के अन्तर्गत आती है। गोदना भी लोककला का ही अंग है। कौड़ी, शंख, चमड़ा, नारियल तथा शीशे से बनी लोक कलाकृतियाँ आज कितने ही कलाकारों की जीविका का प्रमुख साधन है। हैंडलूम के परिधानों तथा घरेलू उद्योग—धन्धों से बनायी जा रही वस्तुओं को कलात्मक बनाने में लोक—कलाओं का प्रयोग सराहनीय ढंग से किया जा रहा है।

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शर्मा, प्रो0 राम किशोर और शर्मा, डॉ0 शिवमूर्ति–प्रयोजनमूलक हिन्दी, इलाहाबाद, श्यामा प्रकाशन संस्थान।
2. त्रिपाठी, पं0 राम नरेश – कविता कौमुदी, भाग–5 (ग्राम गीत)
3. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव–भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन।
4. आर्चर, डब्लू0जी0–भोजपुरी ग्राम–गीत (बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना)
5. गोस्वामी तुलसीदास–राम चरित मानस
6. सिंह, ठा, राम–चारण गीत
7. सत्यार्थी, डॉ0 देवेन्द्र–गिद्धा, बेला फूले आधी रात